04

# पथ की पहचान

## कवि :– डॉक्टर हरिवंश राय बच्चन

**रचनाकार/कवि का परिचय :** डॉ हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म 27 नवंबर 1906 को हुआ। हिंदी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं उनकी प्रसिद्ध कृति मधुशाला है। उनकी मौलिक कृतियों में मधुशाला के अतिरिक्त मधुबाला मधुकलश आदि जैसी कृतियां शामिल हैं उनके इस सरसता वाले काव्य लेखन को लोगों ने बहुत पसंद किया। इनकी मृत्यु 18 जनवरी 2003 को हुई।

**अधिगम प्रतिफल :**

❖ अपरिचित परिस्थितियाँ और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन से बनने वाले छवियाँ और विचारों के बारे में लिखित/ब्रेल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।

❖ अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग अपने अनुभव लिखने में करते हैं।

❖ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न करते हैं।

### सार–संक्षेप–

'पथ की पहचान' शीर्षक कविता का सारांश–: प्रस्तुत कविता में कवि 'बच्चन' ने पथिक के माध्यम से यह प्रेरणा दी है कि मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वविवेक के आधार पर करनी चाहिए, क्योंकि जीवन के मार्ग में विघ्न बाधाएँ आती ही रहती है। किंतु सबके जीवन की बात अलग–अलग होती है अतएव हमें पथ से विचलित नहीं होते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए इसके लिए अपने ही अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते है। इस मार्ग का निर्धारण दूसरे के उपदेश से या पुस्तकों को पढ़कर नहीं किया जा सकता है।

### पद्यांश की व्याख्या–1

**पूर्व चलने के बटोही.........................................______ बाट की पहचान कर ले।**

© JCERT not to be republished

## शब्दार्थ –

बटोही – राहगीर।

बाट – रास्ता।

पंथी – मार्ग।

## सन्दर्भ–

यह पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में हरिवंशराय बच्चन की कविता 'पथ की पहचान' से उद्धृत है। जो कवि की रचना सतरंगिनी में संकलित है।

## प्रसंग–

इसमें कवि कहना चाहता है कि हमें कोई भी कार्य सोच–विचारकर करना चाहिए। लक्ष्य चुन लेने के बाद उस काम की कठिनाईयों से नहीं घबराना चाहिए

## व्याख्या

कवि कहता है कि हमारे जीवन–पथ की कहानी पुस्तकों में नहीं लिखी होती है, वह तो हमें स्वयं ही गढ़नी होती है। दूसरे लोगों के अनुभव के आधार पर भी हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते। इस जगत में अनेक लोग पैदा हुए और मर गए किन्तु उन सबकी गणना नहीं की जा सकती, परन्त कुछ ऐसे कर्मवीर ने भी यहाँ जन्म लिया है, जिनके पदचिह्न मौन भाषा में उनके अच्छे कार्यों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करते हैं। उन सभी महापुरूषों ने काम करने से पहले खूब सोच–विचार कर, जी–जान से अपने कार्य में जुटकर सफलता प्राप्त की। अतः उनसे प्रेरणा लेकर हमें सुनिश्चित करके स्वविवेक से अपने पथ पर चलना शुरू करना चाहिए।

**प्रश्न 1: रिक्त स्थानों को भरें–:**

क. पुस्तकों में है नहीं .................... इसकी कहानी।

ख. हाल इसका ज्ञात होता है ना औरों की ........................।

ग. यह .................... मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है।

घ. पूर्व चलने के बटोही .................... पहचान कर ले।

© JCERT not to be republished

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें:–**

प्रश्न 2.: दूसरे लोगों के अनुभव के आधार पर हम क्या निर्धारित नहीं कर सकते?

प्रश्न 3.: हमारे जीवन पथ की कहानी कैसे लिखनी होती है?

प्रश्न 4.: किनके पदचिह्न मौन भाषा में अच्छे कार्यों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है?

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें :–**

प्रश्न 5.: इन पंक्तियों के काव्यगत सौन्दर्य पर प्रकाश डाले।

प्रश्न 6.: हमारे जीवन की कहानी कहाँ नहीं लिखी होती है और हमें कैसे लिखनी होती है।

प्रश्न 7.: उपर्युक्त पंक्ति के काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

## पद्यांश की व्याख्या–2

**यह बुरा है या कि ................. पहचान कर लें।**

## शब्दार्थ –

व्यर्थ – बेकार में।

अवधान – मनोयोग, ध्यान।

## सन्दर्भ–

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में हरिवंशराय बच्चन द्वारा रचित 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता में उद्धृत है।

## प्रसंग–

कवि बताता है कि विवेकपूर्वक किसी कार्य को चुन लेने पर हमारे मार्ग में कितनी भी बाधाएं आए हमें उसे देखकर डर कर दूर नहीं भागना चाहिए और ना कार्य को अधूरा छोड़ना चाहिए।

© JCERT not to be republished

## व्याख्या

कवि कहता है कि हम जिस मार्ग का चुनाव करते है उस पर चलने के बाद यह नहीं सोचना चाहिए कि यह मार्ग अच्छा है या बुरा जब हम विवेकपूर्ण कार्य का चुनाव कर लेते हैं तो हमें उस पथ को छोड़कर दूसरे पथ का अनुगमन नहीं करना चाहिए क्योंकि कठिनाईयां तो हर समय आती ही रहेगी। वास्तविकता यह है कि जीवन में जिसे भी सफलता मिली है, वह अपने कार्य को श्रेष्ठ समझता रहा है और उसके जीवन में कठिनाईयाँ भी आई है। इसलिए हमें भी अपने कार्य को श्रेष्ठ समझते हुए सोच विचार करके कार्य का चुनाव करन चाहिए।

**8. रिक्त स्थानों को भरें–:**

(क) जब ......................... छोड़ यह पथ

(ख) दूसरे पर ......................... बढ़ाना, यात्रा सरल इससे बनेगी

(ग) हर सफल ......................... यही

(घ) ......................... ले इस पर पड़ा है

(ङ) चित्त का ......................... कर ले

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें–:**

प्रश्न 9. जीवन में किन्हें सफलता मिली है?

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें–:**

प्रश्न 10. हमें कार्य का चुनाव कैसे करना चाहिए?

प्रश्न 11. हमें अपने कार्यों का चुनाव करते समय क्या नहीं सोचना चाहिए?

प्रश्न 12. प्रस्तुत अंश के काव्यगत सौन्दर्य प्रकाश डालें–:

## पद्यांश की व्याख्या–3

**है अनिश्चित ................ पहचान कर ले।**

© JCERT not to be republished

## शब्दार्थ –

सरिता – नदी

गहवर – गुफा।

शर – बाण

आन – प्रतिज्ञा।

बाट – मार्ग।

## सन्दर्भ–

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिन्दी काव्य' से 'हरिवंशराय बच्चन' द्वारा रचित 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

## प्रसंग–

इसमें कवि जीवन–पथ में आनेवाले सुख–दुःख के प्रति सजग करता हुआ मनुष्य को निरन्तर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दे रहा है।

## व्याख्या

कवि कहता है कि अपने–अपने जीवन–पथ के मुसाफिरों को यह नहीं बताया जा सकता है कि मार्ग में किस स्थान पर नदी, पर्वत और गुफाएँ मिलेगी अर्थात् मार्ग में कब कठिनाइयाँ और बाधाएँ आयेंगी, यह भी नहीं कहा जा सकता कि जीवन के मार्ग में किस स्थान पर सुन्दर वन और उपवन मिलेंगे अर्थात् जीवन में कब सुख–सुविधाएँ प्राप्त होंगी। या फिर यह भी निश्चित नहीं कि कब यह जीवन–यात्रा समाप्त हो जाएगी।

कवि आगे कहता है कि यह बात भी अनिश्चित है कि मार्ग में कब हमें फूल मिलेंगे और कब काँटे घायल करेंगी। जीवन में कब सुख प्राप्त होगा और कब दुःख यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। यह भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि जीवन–मार्ग में कौन परिचित व्यक्ति मिलेंगे और कौन प्रियजन अचानक बिछड़ जायेंगे। इसलिए जीवन की कठिनाईयों की परवाह न करके हमें आगे बढ़ते

© JCERT not to be republished

जाना है। अतएव हमें पथ पर चलने से पूर्व जीवन में आनेवाले सुख–दुःख को भली–भाँति जानकर अपने मार्ग की पहचान कर लेना चाहिए।

**13. रिक्त स्थानों को भरें–:**

(क) है ........................ किस जगह पर

(ख) सरित गिरि ........................ मिलेंगे

(ग) है अनिश्चित कब सुमन, कब ........................ के शर मिलेंगे

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें –:**

प्रश्न 14. : कवि ने कठिनाईयों को किस प्रतीक से बताया है?

प्रश्न 15. : सुंदर वन और उपवन किसके प्रतीक हैं?

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें–:**

प्रश्न 16. : यात्रा में विघ्न–बाधाओं को किन प्रतीकों से बतलाया गया है?

प्रश्न 17. : प्रस्तुत पंक्ति के काव्यगत सौन्दर्य पर प्रकाश डाले?

## पद्यांश की व्याख्या–4

**कौन कहता है ........................ कर लें।**

## शब्दार्थ –

यत्न – प्रयत्न, कोशिश।

ध्येय – लक्ष्य।

निलय – घर, नीड़, घोंसला।

मुग्ध होना – रीझना।

© JCERT not to be republished

## सन्दर्भ–

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में हरिवंशराय बच्चन द्वारा रचित 'पथ की पहचान' शीर्षक प्रस्तुत किया गया है।

## व्याख्या

इन पंक्तियों में कवि कहता है कि हमें अपने मन में स्वप्नों अर्थात् मधुर कल्पनाओं को अवश्य आने देना चाहिए क्योंकि सभी की अपनी स्वप्निल कल्पना होती है। अपनी–अपनी उम्र और अपने–अपने समय में सभी ने स्वप्न देखा है और अपने मन में उन्हें जगह दी है। इसलिए हम मन में उठने वाली कल्पनाओं को नहीं रोक सकते हैं। ये स्वप्न, ये कल्पनाएँ व्यर्थ नहीं होती, इनका भी अपना लक्ष्य या ध्येय होता है। ये स्वप्न जब आँखों के नीड़ में उपजते हैं, तब उनका अपना ध्येय होता है, ये व्यर्थ नहीं जाते, किन्तु स्वप्नों से यथार्थ को झुठलाया नहीं जा सकता। कारण यह कि सत्य का मुकाबला कल्पनाओं से नहीं किया जा सकता। संसार के रास्ते में यदि स्वप्न दो है, तो सत्य दो–सौ अर्थात् कल्पनाएँ बहुत कम कम हैं, यथार्थ बहुत अधिक हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम केवल कल्पनाओं पर ही ना जीते रहे बल्कि सत्य क्या है इसका भी निर्धारण करें। चलने से पहले अपने रास्ते की पहचान हमें कर लेना चाहिए।

**18. : रिक्त स्थानों को भरें :–**

क) कौन कहता है कि ..................

ख) को न आने दो ...................

ग) ये ................... होते लिए कुछ

घ) ध्येय ................. निलय में

ड़) स्वप्न पर ही .................. मत हो

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य मे दें–:**

प्रश्नः 19. : हमें किसे स्वप्न में आने देना चाहिए?

प्रश्नः 20. : जीवन में किसके महत्व को नहीं झुठलाया जा सकता है?

© JCERT not to be republished

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें?**

प्रश्नः 21. : हमें किसे और क्यों आने देना चाहिए?

प्रश्नः 22. : प्रस्तुत पंक्ति के काव्यगत सौंन्दर्य पर प्रकाश डालें?

## पद्यांश की व्याख्या–5

**स्वप्न आता स्वर्ग का ............................ पहचान कर लें।**

### शब्दार्थ –

ललकती – लालायित होती है।

उन्मुक्त – स्वच्छन्द।

दृग कोरकों – आँख के कोने।

### सन्दर्भ–

प्रस्तुत काव्यांश डा0 हरिवंशराय बच्चन द्वारा रचित 'पथ की पहचान' नामक शीर्षक कविता से लिया गया है।

### प्रसंग–

इस पद में कवि पथिक को सम्बोधित करते हुए किसी भी मार्ग पर अग्रसर होने से पूर्व आने वाली कठिनाइयों के प्रति अगाह कर देना चाहता है। कोरी भावुकता के प्रवाह में आकर किसी मार्ग पर चल देना उचित नहीं है।

### व्याख्या

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि भावुकता के आवेश में आकर किसी मार्ग के चयन के पूर्व हम स्वप्न में खो जाते है। काल्पनिक उड़ान भरने के लिए हमारे पैरों में पंख लग जाते हैं। छाती उन्मुक्त हो उत्साह से भर जाती है। किन्तु जब राह का एक मामूली–सा काँटा पाँवों में चुभ जाता

© JCERT not to be republished

है और खून की दो बूँदों के बहने मात्र से ही सारी कल्पना की दुनिया ही डूब जाती है जबकि पाँव अर्थात् मार्ग में मामूली अवरोध उत्पन्न हो जाने मात्र से ही हम पीछे हटने लगते है। काँटों का चुभना यह शिक्षा देता है कि भले ही हमारी आँखों में स्वर्ग के सजीले सपने क्यों न हो, किन्तु व्यावहारिक जगत् की उपयोगिता कदापि भूलनी नहीं चाहिए। हमें पथ के चुभे काँटों की इस शिक्षा का सदैव सम्मान करना चाहिए। अवएव किसी मार्ग पर अग्रसर होने से पूर्व उस मार्ग की पूरी जानकारी अवश्य कर लेनी चाहिए।

**23. : रिक्त स्थानों को भरें–:**

क) स्वप्न आता ......................

ख) .................. मैं दीप्ति आती,

ग) रक्त की दो ................... गिरती

घ) एक ....................... डूब जाती

ङ) आँख में हो .................... लेकिन

च) पाँव .................. पर टिके हो,

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें –:**

प्रश्न 24. : हम कब पीछे हटने लगते है?

प्रश्न 25. : हमें किसका सम्मान करना चाहिए?

प्रश्न 26. : हमें अपने पाँव कहाँ टिका कर रखना चाहिए?

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें–:**

प्रश्न 27. : मार्ग में काँटों का चुभना हमें क्या शिक्षा देता है?

प्रश्न 28. : प्रस्तुत पंक्ति के काव्यगत सौन्दर्य पर प्रकाश डाले?

## अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 29. : हरिवंशराय बच्चन किस युग के कवि है?

प्रश्न 30. : 'पथ की पहचान' कविता बच्चन जी की किस रचना से संकलित की गई है?

© JCERT not to be republished

प्रश्न 31. : मधुशाला किसकी रचना है?

प्रश्न 32. : बच्चन जी की भाषा पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 33. : बच्चन जी से अपनी भाषा में किस शैली का प्रयोग किया है?

प्रश्न 36. : 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

प्रश्न 35. : 'पथ की पहचान' कविता का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न 36. :'पथ की पहचान' कविता के द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है? अथवा 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता के द्वारा कवि ने हमें क्या सन्देश देने का प्रयास किया है?

प्रश्न 37. : 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

प्रश्न 38. : निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(अ) पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

(ब) रास्ते का एक काँटा, पाँव का दिल चीर देता।

39. : निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

(अ) रक्त की दो बूँद गिरती एक दुनिया डूब जाती।

© JCERT not to be republished

## पाठ से प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1.** :''पथ की पहचान'' कविता में कवि ने पथ पर चलने से पहले क्या करने के लिए कहा है?

**उत्तर 1.** : ''पथ की पहचान'' कविता में कवि ने पथ पर चलने से पहले यह कहा है कि मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वयं करना चाहिए, क्योंकि जीवन के मार्ग में अपने ही अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते हैं। इस मार्ग का निर्धारण किसी दूसरे के उपदेश या पुस्तकों को पढ़कर नहीं किया जा सकता है। कुछ मनुष्य ऐसे अवश्य रहें हैं, जो अपने पथ पर अपने कदमों के निशान छोड़ गये हैं। हमें उनसे अवश्य कुछ सहायता प्राप्त हो सकता है किंतु पथ की पहचान हमें अपने अनुभव और स्वविवेक से ही करना चाहिए।

**प्रश्न 2.** : पाठ के अनुसार अनगिनत राही इस पथ पर क्या छोड़ गए है?

**उत्तर 2.** : पाठ के अनुसार अनगिनत राही इस पथ पर अपने कदमों के निशान छोड़ गए है।

**प्रश्न 3.** : पथ की पहचान किस प्रकार की जा सकती है?

**उत्तर 3.** :स्वविवेक और अनुभव के आधार पर ही पथ की पहचान की जा सकती है क्योंकि सभी लोगों के जीवन के मार्ग में अलग–अलग अनुभव और बाधाएँ आती है इसलिए अपने ही अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते है।

**प्रश्न 4.** :यात्रा को सरल बनाने के लिए कवि ने क्या सुझाव दिया है?

**उत्तर 4.** :यात्रा को सरल बनाने के लिए कवि ने यह सुझाव दिया है कि जीवन के मार्ग का निर्धारण करके उस पर दृढ़ निश्चय के साथ चल पड़ना ही श्रेयस्कर है। अनिश्चय की स्थिति में बार–बार मार्ग बदलने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। किसी भी मनुष्य का यह सोचना कि पथ के निर्धारण से उसे ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है, गलत है। पहले भी सभी मनुष्यों को अपने पथ का निर्धारण करना पड़ा था और बाधाएँ उनके सामने भी आयी थी।

**प्रश्न 5** :कविता के आधार पर बताइए कि यात्रा में कौन सी चीजें अनिश्चित है?

**उत्तर 5** :हमारे मार्ग में किस जगह पर नदी, पर्वत और गुफाएँ मिलेंगी अर्थात् मार्ग में कब कठिनाइयाँ और बाधाएँ आएगी, यह नहीं कहा जा सकता। यह भी नहीं कहा जा सकता कि जीवन के मार्ग में किस जगह पर सुन्दर वन और उपवन मिलेंगे। हमें जीवन में कब सुख–सुविधाएँ प्राप्त होगी। यह भी निश्चित नहीं कि कब यह जीवन–यात्रा समाप्त होंगी और कब हमारी मृत्यु होगी।

कवि आगे कहता है कि यह बात भी अनिश्चित है कि मार्ग में कब हमें फूल मिलेंगे और कब काँटे घायल करेंगे। जीवन में कब सुख प्राप्त होगा और कब दुःख यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। यह भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि जीवन–मार्ग कौन परिचित व्यक्ति मिलेंगे और कौन प्रियजन अचानक छोड़ जायेंगे। इसलिए हम यह प्रण मन में कर लें की कठिनाईयों की परवाह न करके हमें आगे बढ़ते जाना है।

**प्रश्न 6** : कवि ने स्वप्न पर मुग्ध होने से क्यों मना किया है?

**उत्तर 6** :कवि के कहने का भाव यह है कि सुख के स्वप्नों में न डूबकर जीवन की वास्तविकताओं का भी ज्ञान होना आवश्यक है, तभी उन्नति का पथ प्रशस्त हो सकता है जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ने से पूर्व उचित लक्ष्य या मार्ग का भी निर्धारण कर लेना चाहिए।

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 7 :** कवि ने पृथ्वी पर टिकाए रखने की बात क्यों की है?

**उत्तर 7 :** भावुकता के आवेश में आकर किसी मार्ग पर अग्रसर होने से पूर्व हम स्वर्ग का सपना देखने लगते है। प्रसन्नता के कारण हमारी आँखे चकक उठती हैं। उस समय काल्पनिक उड़ान भरने के लिए हमारे पैरों में पंख लग जाते हैं। छाती उन्मुक्त हो उत्साह से भर जाती है। किन्तु जब राह का एक मामूली–सा काँटा पाँवों में चुभ जाता है और खून की दो बूँदों के बहने से ही सारी कल्पना की दुनिया ही उसमें डूब जाती है अर्थात् मार्ग में मामूली अवरोध उत्पन्न हो जाने मात्र से ही हम पीछे हटने लगते हैं जबकि पांव में काँटों का चुभना यह शिक्षा देता है कि भले ही हमारी आँखों से स्वर्ग के सजीले सपने क्यों न हो किन्तु अपने पैरों को पृथ्वी पर सुरक्षित टिका कर रखना है।

## भाषा संदर्भ

1. कविता में आए हुए रेखांकित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें। जैसे– ''पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले, पुस्तकों में है नहीं छापी गई इसकी कहानी''।

क. बटोही – राहगीर, पथिक, पंथी, यात्री

ख. बाट – रास्ता, मार्ग, पथ

ग. पुस्तकों – किताबों, ग्रंथों, पोथियों

घ. कहानी – कथानक, अख्यान, गल्प

**अन्य शब्दों के पर्यायवाची शब्दः–**

क. गिरि – धरणीधर, नगपति, शिखर, महीधर, भूधर

ख. सरिता – नदी, स्रोतश्विनी, सरिस, तनुजा, सारंग, तटनी, जयमाला, तरंगिणी

ग. दरिया – गहरा गड्ढ़ा, गुफा

घ. दृग – दृष्टि, अक्षि, आँख, लोचन, नयन

ड. पंख – पर, पाँख, डैना, पखौटा

च. रक्त – लहू, रूधिर, सोनित, लोहू खून।

© JCERT not to be republished

2. कविता में नदी के लिए सरित, सपना के लिए 'स्वप्न', काँटा के लिए 'कंटक' तथा गड्ढ़ा के बदले 'गह्वर' शब्द आए है यह संस्कृत के शब्द हैं जिनका प्रयोग उनके मूल रूप में ही हिंदी में भी होता है, ऐसे शब्दों को तत्सम कहा जाता है।

ऐसे शब्द जो 'तत्सम' के रूप बदलने से बनते हैं 'तद्भव' कहलाते हैं।

**नीचे दिए गए 'तद्भव' शब्द का 'तत्सम' रूप लिखिए।**

अंधा – अंध

अग्नि – आग

कर्ण – कान

चंद्र – चाँद

कपूर – कर्पूर

सूरज – सूर्य

रात – रात्रि

सपना – स्वप्न

आँख – कंटक

सच – सत्य

**3. इनके विलोम शब्द लिखिए–:**

ज्ञात – अज्ञात

मूक – वाचाल

सफल – असफल

अनिश्चित – निश्चित

© JCERT not to be republished

पूर्व – उत्तर

दिन – रात

सत्य – असत्य

स्वर्ग – नरक

## व्याख्या आधारित प्रश्नों के उत्तर

**उत्तर 1.**

क) छापी गई

ख) जबानी

ग) निशानी

घ) बाट की

उत्तर 2. दूसरे लोगों के अनुभव के आधार पर हम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते।

उत्तर 3. हमारे जीवन – पथ की कहानी पुस्तकों में नहीं लिखी होती है, वह तो हमें स्वयं ही गढ़नी होती है।

उत्तर 4. कर्मयोगियों के पदचिह्न मौन भाषा में अच्छे कार्यों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करते हैं।

उत्तर 5. कार्य करने से पहले स्वविवेक से विचार करने की प्रेरणा दी गई है एवं सही अर्थों में हमें स्वयं कर्मवीर बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

उत्तर 6. कवि कहता है कि हमारे जीवन–पथ की कहानी पुस्तकों में नहीं लिखी होती है, वह तो हमें स्वयं ही गढ़नी होती है क्योंकि हम दूसरे लोंगों के अनुभव के आधार पर अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकते।

उत्तर 7. इस पद में स्वयं के अनुभव को महत्व देते हुए बताया है कि हमें अपने जीवन कहानी, हमें पुस्तकों में नहीं मिलती।

भाषा – सरल तथा खड़ीबोली।

शैल – गीत शैली।

© JCERT not to be republished

रस – शान्त।

अलंकार – विरोधाभास

उत्तर 8.

क. असंभव

ख. पग

ग. पंथी

घ. विश्वास

ड़. अवधान

उत्तर 9. जीवन में जिसने भी अपने कार्य को श्रेष्ठ समझता रहा है, उसे सफलता मिली है।

उत्तर 10. कार्य को श्रेष्ठ समझता रहा है और उसके जीवन में कठिनाईयाँ भी आई है। इसलिए हमें अपने कार्य को श्रेष्ठ समझते हुए सोच विचार करके कार्य का चुनाव करना चाहिए क्योंकि जीवन में कठिनाइयाँ अवश्य आती है।

उत्तर 11. हम जिस मार्ग का चुनाव करते हैं उस पर चलने के बाद यह नहीं सोचना चाहिए कि यह मार्ग अच्छा है या बुरा जब हम विवेकपूर्ण कार्य का चुनाव कर लेते हैं तो हमें उस पथ को छोड़कर दूसरे पथ का अनुगमन नहीं करना चाहिए।

उत्तर 12. जब कार्य चुन लेते हैं तो हमें उस पर जी जान से जुट जाना चाहिए।

भाषा – सरल – सुबोध खड़ीबोली।

शैली – प्रवाहपूर्ण गीत शैली।

रस – शान्त

शब्द – शक्ति – लक्षणा।

अलंकार – अनुप्रास।

उत्तर 13.

क. अनिश्चित

ख. गहवर

ग. कंटकों के

© JCERT not to be republished

उत्तर 14. कवि ने कठिनाईयों को नदी पर्वत गुफाएँ आदि प्रतीकों के माध्यम से बताया है।

उत्तर 15. सुंदर वन और उपवन सुख के प्रतीक हैं।

उत्तर 16. बाधाओं और कठिनाइयों के लिए कवि ने नदी, पर्वत, गुफाओं और काँटों आदि को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है।

उत्तर 17. कवि ने जीवन में आने वाली कठिनाइयों के प्रति मानव को सचेत किया है।

भाषा – सरल खड़ीबोली।

शैली – प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक।

रस – शान्त

शब्दशक्ति – लक्षणा।

अलंकार – अनुप्रास, रूपक।

उत्तर 18. :

क. सत्य का भी कर लें।

ख. स्वप्नों

ग. हृदय में

घ. उदय

ङ़. नयनों के

च. मुग्ध

उत्तर 19. हमें मधुर कल्पनाओं को स्वप्न में आने देना चाहिए।

उत्तर 20. जीवन में यथार्थ के महत्व को नहीं झुठलाया जा सकता है।

उत्तर 21. हमें स्वप्न के मधुर कल्पनाओं को आने देना चाहिए, क्योंकि सभी की अपनी स्वप्निल कल्पना होती है।

उत्तर 22. यहाँ कवि कहना चाहता है कि हमें अपनी कल्पना की दुनिया में नहीं खोए रहना चाहिए। हाँ सपना अवश्य देखना चाहिए किंतु यथार्थ के धरातल पर। इसके लिए हमें कठिन श्रम के साथ ही अपने कर्त्तव्य का पालन भी करना होगा।

© JCERT not to be republished

भाषा – साहित्यिक हिन्दी।

रस – शान्त।

गुण – प्रसाद

अलंकार–रूपक तथा अनुप्रास

उत्तर 23. :

क. स्वर्ग का

ख. दृग–कोरकों

ग. बूंद

घ. दुनिया

च. स्वर्ग

छ. पृथ्वी

उत्तर 24. हम मामूली अवरोध से डर जाते हैं।

उत्तर 25. हमें काँटों की सीख का सम्मान करना चाहिए।

उत्तर 26. हमें अपने पाँव धरती पर टिका कर रखना चाहिए अर्थात् व्यावहारिक जगत् की उपयोगिता कदापि भूलनी नहीं चाहिए।

उत्तर 27. काँटों का चुभना यह शिक्षा देता है कि भले ही हमारी आँखों में स्वर्ग के सजीले सपने क्यों न हों किन्तु अपने पैरों को पृथ्वी पर सुरक्षित टिकाना है अर्थात् मस्तिष्क में भले ही कल्पना की ऊँची उड़ाने क्यों न हो, किन्तु व्यावहारिक जगत् की उपयोगिता कदापि भूलनी नहीं चाहिए।

उत्तर 28. इस जीवन–दर्शन के माध्यम से कवि व्यवहारिक जीवन की उपयोगिता को प्रस्तुत किया है। लाक्षणिक प्रयोगों के कारण काव्य की भाषा प्रभावशाली बन गयी है।

उत्तर 29. आधुनिक युग (काल) के।।

उत्तर 30. सतरंगी

उत्तर 31. हरिवंशराय बच्चन की।

उत्तर 32. खड़ीबोली।

© JCERT not to be republished

उत्तर 33. भावात्मक गीत शैली।

उत्तर 34. मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वयं विवेक और अपने अनुभव के आधार पर करनी चाहिए दूसरों के जीवन से प्रभावित होकर नहीं करनी चाहिए क्योंकि जीवन के मार्ग में अपने ही अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते हैं।

उत्तर 35. व्यक्ति को विवेकपूर्वक किसी कार्य का चयन और निरन्तर अपने पथ पर अग्रसर रहना चाहिए। तभी हमें सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

उत्तर 36. कवि इस कविता के माध्यम से यह सन्देश देना चाहता है कि व्यक्ति को विवेकपूर्वक किसी कार्य को चुनना चाहिए, फिर आनेवाली किसी भी बाधा से घबराए बिना साहसपूर्वक निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए। आगे बढ़ते हुए आदर्श और यथार्थ का उचित समन्वय होना चाहिए।

उत्तर 37. प्रस्तुत कविता में कवि 'बच्चन' ने पथिक के माध्यम से यह प्रेरणा दी है कि मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वयं करनी चाहिए, क्योंकि जीवन के मार्ग में अपने ही अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते हैं। इस मार्ग का निर्धारण किसी दूसरे के उपदेश से या पुस्तकों को पढ़कर नहीं किया जा सकता है। कुछ मनुष्य ऐसे अवश्य रहे हैं, जो अपने पथ पर अपने कदमों के निशान छोड़ गये हैं। हमें उनसे अवश्य कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है।

कवि कहता है कि जीवन के मार्ग का निर्धारण करके उस पद दृढ़ निश्चय के साथ चल पड़ना ही श्रेयस्कर है। अनिश्चय की स्थिति में बार–बार मार्ग बदलने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। कवि कहता है कि किसी भी मनुष्य का यह सोचना कि पथ के निर्धारण में उसे ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है, गलत है। पूर्व के सभी मनुष्यों को भी अपने पथ का निर्धारण करना पड़ा था और बाधाएँ उनके सामने भी आई थी।

उत्तर 38. : (अ) काव्य – सौन्दर्य – किसी पथिक या राही को मार्ग पर चलने के पूर्व उसके विषय में भली – भाँति अवगत हो जाना चाहिए।

भाषा – खड़ीबोली।

शैली – भावात्मक गीत शैली।

(ब) काव्य – सौन्दर्य–

रास्ते का एक काँटा पाँव को चोटिल कर देता है अर्थात् रास्ते को एक काँटा अनेक मुसीबतें खड़ी कर देता है।

भाषा – खड़ीबोली। (स) शैली – भावात्मक गीत शैली।

उत्तर 39. : (अ) अतिश्योक्ति।

© JCERT not to be republished